IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

गांधी चिंतन-एक विचारधारा

डॉ० बबली अरुण

असिस्टेंट प्रोफेसर

कुमारी मायावती राजकीय महिला स्नातकोतर महाविद्यालय

बादलपुर.

गौतम बुध नगर।

सारांश

महात्मा गांधी जी की विचारधारा नवीन आयामों को दर्शाती है जो कि मनुष्य के नैतिक गुणों का आधार है। गांधी जी का चिंतन और फिर उस पर मनन करके उन्होंने अपने विचारों को इस प्रकार से समाज के समक्ष रखा जिसने इस देश में एक नवीन क्रांति को हमारे सम्मुख खड़ा कर दिया। गांधी किसी एक व्यक्ति का नाम नहीं गांधी एक विचारधारा है जिसने देश विदेश के करोणो लोगों को अपने अंदर समाहित कर लिया। और अपने विचारों से इस विश्व के धरातल पर एक नवीन क्रांति को जन्म दिया।

भारत की हर चीज मुझे आकर्षित करती है ऐसी उच्च आकांक्षाएं रखने वाले किसी व्यक्ति को अपने विकास के लिए जो कुछ चाहिए वह समस्त उसे भारत में ही मिल सकता है इस विचारधारा को प्रवाहित करने वाले महात्मा गांधी जी ने भारत के लिए एक नवीन कल्पना की। और इसी कल्पना को अमुक रूप देने के लिए उन्होंने अपने विचारों की एक अनूप धारा प्रवाहित की जिससे उनके समय काल का कोई भी व्यक्ति उस धारा में बिना बहे ना रह सका। गांधी जी का चिंतन उनकी कल्पना शक्ति को दर्शाता है कि किस प्रकार के विचार गांधीजी के हृदय में

उत्पन्न हुए और उन्होंने किस प्रकार से उन विचारों को अपना मुहूर्त रूप दिया गांधी जी ने सत्य अहिंसा का मार्ग दिखाते हुए भारत के प्रत्येक पहलुओं पर मंथन किया और एक ऐसी विचारधारा उत्पन्न की जिसमें समस्त भारत वहा।

गांधीजी को समझने के लिए हमें गांधीजी की विचारधारा को एक नवीन कल्पना के साथ विभिन्न पहलुओं से देखना व सोचना पड़ेगा। इस क्रम में सर्वप्रथम गांधी जी का अहिंसा का मार्ग हमारे समक्ष आता है।

सत्य

गांधी जी मानते थे कि ईश्वर और सत्य एक दूसरे के पूरक शब्द है विश्व में केवल सत्य ही टिकेगा बाकी सब कुछ समय के ज्वार में बह जाएगा। जो व्यक्ति सत्य की खोज करने में लगा है उसे धूल से भी अधिक न होना चाहिए सत्य और अहिंसा दोनों ही जुड़वा भाई और बहन हैं। सही रास्ते का प्रथम सूत्र है सत्य बोलना सत्य सोचना एवं सत्य के मार्ग का ही अनकरण करना चाहिए। अहिंसा

गांधी जी ने कहा पारस्परिक सहिष्णुता ही अहिंसा है अहिंसा महानतम गुण है तथा कायरता महानतम अवगुण। अहिंसा के मार्ग पर चलने वालों को केवल एक ही भय होता है और वह है ईश्वर का जो लोग स्वच्छता से कष्टों से होकर गुजरते हैं वे स्वयं ऊंचे उठते हैं और सारी इंसानियत को भी ऊपर उठाते हैं। अहिंसा मानव जाति के हाथ में सबसे बड़ी शक्ति है।

धर्म

उनका मानना था कि धर्म विहीन नैतिक जीवन, बालू पर बने घर के समान है। धर्म मनुष्य को एक दूसरे से अलग करने के लिए नहीं अपितु उनको बांधने के लिए होता है आप विज्ञान का निरूपण भौ धौ द्वारा ही होता है किसी भी धर्म को उसकी निकटतम बुराई से नहीं बल्कि उसकी अच्छाई से परखना चाहिए जो कि उसमें हैं। धर्म का

आधार संयम है।

शिक्षा

गांधी जी कहते थे कि शिक्षा से मेरा तात्पर्य है बालक और मनुष्य के तन, मन व आत्मा में चतुर्मुखी विकास करना। जो की साहित्यिक शिक्षा का कोई भी मूल्य नहीं होता है यदि वह एक ठोस चरित्र नहीं बना सकती तब।

वास्तविक शिक्षा तो अपने सर्वोत्तम विकास करने में है भरा इंसानियत की किताब से बेहतर भी कोई और किताब कैसे हो सकती है। व्यक्तिगत जीवन की पवित्रता किसी को शिक्षण की सरचना के लिए आवश्यक एवं अनिवार्य शर्त है जब हमारा हृदय शुद्ध ना हो और हम अपनी भावनाओं पर नियंत्रण ना रख सके तब आप एक शिक्षित व्यक्ति नहीं हो सकते।

अस्पृश्यता

गांधी जी कहते थे कि मेरे सपनों के भारत में अस्पृश्यता के अभिशाप के लिए कोई स्थान नहीं हो सकता। अस्पृश्यता विवेक और तर्क के विरुद्ध विचारधारा होती है जो दया करुणा तथा प्रेम से भी मेल नहीं खाती। अस्पृश्यता हिंदुत्व को उसी प्रकार

से जहरीला बना देती है जिस प्रकार से एक बूंद जहर दूध को विषैला बना देता है। अस्पृश्यता का निवारण अहिंसा की उच्चतम अभीव्यक्तियों में से है।

प्रार्थना

महात्मा गांधी जी का कहना था कि प्रार्थना व्यक्ति की अपनी योग्यता व दुर्बलता की स्वीकारोक्ति है प्रार्थना नम्रता की पुकार है यह हमारी आत्म शुद्धि और अंततः खोज की गुहार भी है। गरीबी के लिए कार्य करने से बढ़कर ईश्वर उपासना का कोई और मार्ग या तरीका में सोच भी नहीं सकता हूं। प्रार्थना कोई याचना नहीं है वह तो हमारी आत्मा की अभिलाषा है।

नारी

नारी व स्त्री के विषय में गांधी जी का मानना था कि नारी की वास्तविक आभूषण तो उसका चरित्र व पवित्रता ही है। नारी स्वय को पुरुष की कामवासना का पदार्थ या वस्तु समझना बंद कर दे इसका इलाज पुरुष की अपेक्षा नारी के ही हाथ में सबसे ज्यादा है।

सेवा और त्याग भावना की जीवित मूर्ति के रूप में मैंने नारी जाति की पूजा की है। अमृत के लिए तरस रही बा प्रतिदिन करती इस दुनिया को शांति की कला सिखाना नारी का कार्य है क्योंकि वही अशांत मन को शांत कर

सकती है।

स्त्री पुरुष की समानता का अर्थ यही नहीं उनके कंधे भी एक ही हो, इस प्रकृति ने स्त्री को पुरुष का पूरक बनाया है जैसे उनके शरीर भिन्न-भिन्न हैं उसी प्रकार उनके कार्य भी भिन्न-भिन्न होते हैं।

नशाबंदी

महात्मा गांधी जी प्राया यही विचारधारा रखते थे कि शराब की दुकाने समाज पर एक अभिशाप है। नशाबंदी का अर्थ है संपूर्ण राष्ट्र का एक प्रकार का प्रशिक्षण, ना कि सिर्फ शराब की दुकानों का बंद होना। नसे में किसी भी प्रकार से लिप्त होना दुर्गुण ही नहीं एक रोग है।

वे कहते थे कि नशीली वस्तुए और शराब शैतान के वे दो हाथ हैं जिनसे वह अपने असहाय गुलामों को मुड़ता और

नशे में ढकेल देता है।

स्वराज्य

स्वतंत्र भारत के स्वरूप और देश की प्रमुख समस्याओं के विषय में गांधी जी के विचार गांधी जी ने समय-समय पर जो विचार स्वराज्य के अर्थ के संदर्भ में अपने विभिन्न विचार अपने विभिन्न भाषणो विभिन्न पुस्तकों व पत्रिकाओं एवं समाचार पत्रों में समय-समय पर स्पष्ट किए हैं।

स्वराज्य से गांधी जी का अभिप्राय है अपने देशवासियों से निकृष्टतम के लिए भी स्वतंत्रता। और प्रत्येक व्यक्ति

को उसकी आवश्यकता अनुसार अर्थ की उपलब्धता।

मेरे सपनों का रामराज्य तो राजा और रंक दोनों के समान अधिकारों को सुनिश्चित करता है जनता द्वारा जनता के लिए जनता का शासन किसी एक आदमी की विचारधारा पर नहीं चल सकता चाहे वह व्यक्ति कितना ही महान क्यों ना हो।

स्वतंत्रता अपने साथ अनुशासन और नम्रता लिए हुए रहती है।

नेता, सत्ता और राजनीति

किसी देश की शुभ व्यवस्था व अर्थव्यवस्था की पहचान वहां पर रहने वाले पूजी पतियों की संख्या से नहीं बल्कि स देश की आम जनता में भुखमरी की अनुपस्थिति से होती है। ऐसा मत था गांधी जी का।

वे चाहते थे कि साहस सही सुरता निर्भीकता और सबसे ऊपर आत्म त्याग यह गुण हमारे नेताओं में होने चाहिए। वे कहते थे कि यदि आप न्याय चाहते हैं तो हमे भी दूसरों के प्रति न्याय बरतना होगा लोकतंत्र में जीवन का कोई भी पहलू अछूता नहीं रहता नेताओं के लिए राजनीति सत्ता कोई लक्ष्य नहीं होनी चाहिए बल्कि लोगी के जीवन के हर क्षेत्र में अपनी स्थिति उत्तम बनाने योग्य साधनों में से एक होनी चाहिए।

जीवन के सिद्धांत

गांधी जी कहते थे कि अपने देश की प्रतिभाओं को रुपए पैसों में बदलने की बजाय अपने देश की सेवा में लगा दीजिए। क्योंकि संतोष प्रयत्न में निहित है ना की प्राप्ति में। जितनी आपकी क्षमताएं हैं उससे आगे मत जाइए अनुशासन और संयम के नियम की अवहेलना करना आत्महत्या है। उन्होंने हिंदू मुस्लिम एकता पर हमेशा बल दिया वे कहते थे कि

परिस्थितियों में

हिंदू मुस्लिम एकता हमेशा

हर समय तथा हर

कायम रहने वाला हमारा आचार धर्म होना चाहिए। पड़ोसियों से यदि हमें कोई कोई कितना भी क्रांतिकारी परिवर्तन हो वह हमारा कोई भी भला नहीं कर सकता। प्यार नहीं है तू क्योंकि शक्ति जितनी अधिक आरंभ होगी उतनी ही अधिक वह शांत बाप सक्षम होगी प्रेम ही दुनिया में सबसे सूक्ष्म शक्ति है। और कायरता कभी भी नैतिक नहीं हो सकती।

गांधी वाणी

आर्थिक क्षेत्र में गांधी जी स्वयं भी सादगी भरे जीवन जीने के आदी थे व बहू यह कहते थे कि सादगी बनाने से नहीं बनती स्वभाव में होनी चाहिए। और जो जीवन सेवा में व्यतीत होता है वह हमेशा ही फलदाई होला है। वे कहते थे कि ग्राम स्वराज्य की मेरी कल्पना यह है कि वह एक ऐसा पूर्ण प्रजातंत्र होगा जो अपनी अहम जरूरतौ के लिए अपने पड़ोसियों पर भी निर्भर नहीं करेगा और फिर भी बहुत सी ऐसी आवश्यकताओं के लिए जिसमें हमे दूसरे का सहयोग अनिवार्य होगा वहा परस्पर सहयोग से हम काम ले लेंगे।

गांधीजी कहती थी कि गरीबों के लिए रोटी ही अध्यात्म है। उन करोड़ों लोगों को आप इसी तरह प्रभावित नहीं कर सकते कोई दूसरी बात उनका ध्यान आकर्षित बिल्कुल भी नहीं कर सकती हां आप उनके पास भोजन लेकर जाइए तो वह आपको ही अपना ईश्वर समझ लेंगे। क्योंकि गरीब के लिए भूख सर्वोपरि होती है वह लोग कोई और विचार कर ही नहीं सकते, क्योंकि जब तक पेट नहीं भरेगा मनुष्य के मस्तिष्क में किसी भी अन्य विचार का आना असंभव ही होता है पेट भरने पर ही हमारी बुद्धि ठीक से कार्य करती है। गांधी जी ने उनके दुख और दर्द को उनके बीच में जाकर महसूस किया वह आगे कहते हैं कि मैंने उनके फटे पुराने कपड़ों की गानों में बंधे हुए फुटकर पैसे खट्टे किए हैं उनसे आधुनिक प्रगति की बातें ना कीजिए क्योंकि आर्थिक स्थिति उनकी इतनी अधिक दयनीय होती है जहां पर विकास की बातें उनकी बुद्धि में आना संभव ही नहीं उनके सामने व्यर्थ है ईश्वर का नाम लेकर उनका अपमान भी ना कीजिए हम उनसे ईश्वर की बात करेंगे तो वह आप हो और मुझे राक्षस बताएंगे अगर वे किसी ईश्वर को पहचानते हैं तो उनके बारे में उनकी कल्पना यही हो सकती है कि वह लोगों को आतंकित करने वाला दंड देने वाला एक निर्दई अत्याचारी है क्योंकि भूखे पेट भजन नहीं होते।

किसी भी देश की आर्थिक स्थिति को ऊंचा उठाने में वहा के नागरिकों की मुख्य भूमिका होती है क्योंकि अगर देश के नागरिक स्वच्छता से दुख और तकलीफ को चुनते हैं तो वह खुद को ऊंचा उठाते हैं इससे समस्त मनुष्य जाति का मस्तक भी ऊंचा होता है जिस देश में त्याग और बलिदान की क्षमता सीमित हो जाए उसकी प्रगति बहत आगे तक नहीं होती गांधी जी कहते हैं कि मैं मानता हूं कि ताकतवर ही हमेशा कमजोर को दबाता है और कमजोर होना पाप है मेरी स्वदेशी की परिभाषा में यह नहीं आता कि पास का पडोसी नुकसान में रहे और दूर का पड़ोसी फायदा उठाते चला जाए।

गांधीजी मानते थे कि चरखा अधिक से अधिक लोगों का केवल भला करने के लिए ही नहीं है यह उनके आर्थिक स्तर को भी ऊंचा उठाता है ऐसी अर्थ प्रणाली जो एक देश को दूसरे देश की लूट खसोट करने की अनुमति देती हो वह अनैतिक है। किसी देश की व्यवस्था की जांच इससे नहीं होती कि उसमें कितने लखपति हैं बल्कि इस बात से होती है कि वहां पर भूखा तो नहीं मरता। ऐसी कोई भी वस्तु जो देश के प्रत्येक नागरिक की पहुंच के अंदर ना हो बसे लेने से हमें साफ इंकार कर देना ही ठीक होता है और यही एक सर्वोतम नीति है। क्योंकि जो चीज आपके पास

में नहीं होती उसकी कीमत हम हमेशा ही ज्यादा आकते हैं। गांधीजी के विचार प्रत्येक आम आदमी पर बिल्कुल सटीक बैठते हैं मैं यह भी कहते हैं की दूसरा आदमी अपना कार्य ठीक तौर से करता है या नहीं इस बात की निगरानी रखना बुरी बात होती है एक नौकर और मालिक के बीच मात्र धन का ही नहीं प्रेम का बंधन होना चाहिए। क्योंकि जहा पर धन काम नहीं आता वहां पर सद्गुण काम आता है। इसलिए वास्तव में सच्चा श्रम वही होता है जिससे कोई उपयोगी वस्तु उत्पन्न की जाए और उपयोगी वह है जिससे मानव जाति का कल्याण हो सके। स्वराज्य तो एक मनोदशा होली है जब इस मनोदशा की प्रतिष्ठा हो जाएगी तब उसकी प्रतिमा बनेगी जब से हमारी मनोदशा बदली उसी समय से स्वराज्य को मिला हुआ समझना चाहिए। कोई भी जाति केवल अनुकरण करके ही अपने अस्तित्व को कायम नहीं रख सकती और ना ही कोई जाति विलासिता में पढ़कर जीवित रह सकती है जो जाति दान पुणे के सहारे जीवित रहती है उसका नाश हो जाता है। क्योंकि अपने शरीर के खून पसीने से प्राप्त सुविधाएं ही मनुष्य को हजम हो सकती हैं जो मनुष्य अपनी जाति की दी हुई सुख-सुविधाओं का कम से कम उपयोग करता है उसी का पुरुषार्थ सच्चा होता है इसलिए मनुष्य की मेहनत को ही अग्रणी रखना चाहिए।

एक साथ में बहुत सारा खा लेना जिस प्रकार से हमारे शरीर के लिए हानिकारक होता है उसी प्रकार एक ही समय आत्मविश्वास सा काम करना भी हमारी आत्मा को दुखी पर बहत खी बनाता है। का द्योतक है चरखा इस बात की । मेरे लिए चरखा प्राचीन समृद्धि की पुनर्स्थापना और सबसे खरी कसौटी है कि हमने अहिंसा की भावना को कहां तक ग्रहण किया है चरखा एक ऐसी चीज है जो हिंदू और मुसलमानों को ही नहीं बल्कि हमारे देश में रहने वाले अन्य धर्म को भी एक सूत्र में बांध देगा चरखा भारतीय नारी के सतीत्व का प्रतीक होता है।

समय को नष्ट करने एक शाम को बढ़ाने और फिर उन इच्छाओं की तृप्ति की खोज में पृथ्वी के छोर तक जाने की पागलपन भरी चाहत से मैं हृदय से घृणा करता हूं।

शिक्षा नीति

गांधी जी का मत है कि हमारे अंदर जो सर्वोतम है उसे उसे निकालने में ही वास्तविक शिक्षा है मानवता की पुस्तक से बढ़कर कोई और अन्य पुस्तक नहीं हो सकती। वास्तविक व्यक्तित्व स्वयं को सुनने वक्त बनाने में है जीवन का रहस्य निष्काम सेवा है। गांधीजी ने माना कि विदेशी भाषा ने हमारे बच्चों के दिमाग को शिथिल कर दिया है और उनकी दिमागी शक्तियों पर अनावश्यक बोझ डाला है उनके मौलिक विचारों और कार्यों के लिए उन्हें अयोग्य कर दिया है और अपनी शीशा का सार अपने परिवार तथा समाज तक पहुंचाने में उन्हें असमर्थ बना दिया है इस विदेशी भाषा में हमारे बच्चों को पूरा विदेशी बना दिया है वर्तमान शिक्षा प्रणाली का यह सबसे बड़ा दुखात दृश्य है अंग्रेजी भाषा में या अंग्रेजी भाषा के अत्यधिक प्रयोग ने हमारी देशी भाषाओं के विकास को रोक दिया है यदि मेरे हाथ में शक्ति होती तो मैं आज से ही विदेशी भाषा को बंद करवा देता और सारे शिक्षकों और अध्यापकों से यह अनुरोध करता है कि वह अग्रेजी माध्यम से शिक्षा ना दे मैं किसी नियम के बनने का इंतजार नहीं करता वे तो परिवर्तन के पीछे पीछे चली आएंगी।

वह कहते थे की सभ्यता विनय और विनम्रता इन गुणों पर आजकल शिक्षा में इतना कंबल दिया जाता है कि उससे ऐसा प्रतीत होता है कि मानो चरित्र गठन में उसका कोई स्थान ही ना हो। विनय और नम्रता शांति की निशानी है उद्दंडता शांति का प्रतीक।

समाज रचना

गांधी जी कैसे थे की किसी की गुलामी करने से दहशल और स्वार्थ की गुलामी बढ़ती है जीवन कोई गुलाब का बिछडना नहीं है यह तो कांटों से भरा हुआ है जिगर के अंदर अमृत गिर जाने पर अमृत भी जहरीला हो जाता है ऐसी विचारधारा थी गांधी जी की कि दुख और संताप मानवता के कानून है जबकि इसके विपरीत झगड़ा और फसाद करना बर्बरता के कानून हैं और यदि हम स्वयं के लिए न्याय चाहते हैं तो हमें दूसरों के लिए भी न्याय ही करना

पड़ेगा।

सभ्यता की उत्कृष्टता को परखने की कसौटी यह है कि उसमें अल्पसंख्यकको के साथ किस प्रकार का व्यवहार होता है। जो व्यक्ति समाज सुधारक के रूप में कार्य करता है उसके मार्ग में गुलाब के फूल नहीं कांटे बिछाए जाते हैं जिन पर उन्हें सावधानी से चलना पड़ता है। किसी भी सिद्धांत के समर्थकों को यह दावा करने का अधिकार नहीं है के केवल हमारा बताया हुआ सिद्धांत भी सही है क्योंकि हम सब से भूल हो सकती है और समय के साथ हमें प्राया

अपने विचार बदलने पड़ते हैं। भारत जैसे विशाल देश में हर एक प्रमाणिक विचार के लिए स्थान आवश्यक होना चाहिए। हमारा स्वयं अपने प्रति तथा दूसरों के प्रति कम से कम इतना कर्तव्य तो आवश्यक है कि हम अपने विरोधियों के विचारों को समझे और यदि उनके मत से सहमत ना भी हो तब भी हम उनका आदर करें जितना हम उनसे अपने विचारों की आदर की उम्मीद रखते हैं यही दृष्टिकोण स्वस्थ सार्वजनिक जीवन की एक आवश्यक कसौटी है। मैं उस ईश्वर के अतिरिक्त किसी और ईश्वर को नहीं जानता जो प्रत्येक प्राणियों के हृदय में मिलता है। हमें मनुष्यता पर विश्वास कभी नहीं छोड़ना चाहिए वह तो समुद्र के समान है समुद्र की कुछ बूंदे यदि गंदी भी हो जाए तों क्या पूरा समुंद्र ही गंदा हो जाता है।

राजनीति

गांधीजी सोचते थे कि स्वतंत्रता को अस्वीकार करके किसी भी समाज का निर्माण संभव नहीं हो सकता। मेरे विचार में लोकतंत्र वही है जिसमें हर कमजोर से कमजोर व्यक्ति को भी उतनी ही सुविधाएं प्राप्त हो जितनी कि एक ताकतवर मनुष्य को। क्योंकि लोकतंत्र ही समाज को स्वस्थ रख सकता है इस दल दल जहां अंतरात्मा का प्रश्न हो वहां पर बहमत का कानून कोई भी मायने नहीं रखता है। वही रात सच्चा लोकतंत्रात्मक है जो अपने कार्य को बिना किसी हस्तक्षेप के सुचारु और सक्रिय रूप से चलाता रहता है। जो सरकारी कमजोर है या बिना समझे काम करती हैं उन्हें राजनीति करने से वंचित कर देना चाहिए और उनके स्थान पर दूसरों के लिए जगह खाली कर देनी चाहिए। गाधीजी मानते हैं कि मेरे लिए देशभक्ति और मनुष्यता में कोई भी अंतर नहीं है क्योंकि बुराई तो संकीर्णता स्वार्थपरता और अलगाव में है जो कि आधुनिक राष्ट्रों के लिए कलंक है।

गांधीजी सत्याग्रही थी और वह जीवन भर सत्य के मार्ग पर चले। क्योंकि खुद मानते थे जो व्यक्ति सत्य के मार्ग पर चलता जय बांटना नहीं सिखाता है तो उनको एक सूत्र में पिरो कर रखना सिखाता है। गांधी जी कहते थे कि यदि मुझे कायरता और हिंसा में से किसी एक को चुनने को कहां जाएगा तो मैं कहूंगा की कायरता से हिंसा भली। मृत्यु तो सदैव मुक्ति का साधन है लेकिन जो वीर अपना कर्तव्य निभाते हुए मृत्यु को चुनता है वह धन्य है। एक निष्कपट व्यक्ति का आत्म बलिदान उन लाखौं व्यक्तियों के बलिदान की अपेक्षा लाखों गुना बड़ा और शक्तिशाली होता है जो दूसरों के प्राण लेते हुए अपनी जान देते हैं ऐसे विचार थे महात्मा गांधी के जिन्होंने जीवन पर्यंत एक नवीन विचारधारा का उद्घोष किया और इस देश के करोड़ों लोगों को अपने विचारों से सहमत करते हुए उस पर चलने पर मजबूर कर दिया।

संदर्भ ग्रंथ सूची

पुस्तक।

लेखक

तीसरी दुनिया का तीसरा रास्ता डॉ० डी०एन० चतुर्वेदी

गांधी

महात्मा गांधी और उनकी

महिला मित्र।

गिरजा कुमार

आजादी आधी रात को डोमिनिक लापीएर लैरी कोलिंस

गांधी

अशोक चक्रधर

गांधी मानुष

शरत कुमार महांति

महात्मा गांधी के विचार आर०के० प्रभु, यू०आर०राव

बालपोथी

काशीनाथ त्रिवेदी